From the Editor's Desk

The editorial team bids farewell to Shri H.R. Khan our esteemed editor who transformed this magazine into a vibrant and effective medium of dissemination of information and knowledge in the areas of agriculture, rural credit, SME, microfinance, Information and Communication Technology, HRM, etc. The special issues on Cooperative Banking, ICT for Rural Financial Services, Organic Agriculture, SME Financing, etc. brought out in the recent past drew critical acclaim from all the stakeholders and discerning readers. I took over as Principal of the College on May 7, 2007 and it is my great privilege to take over the responsibility as Editor CAB Calling. CAB, a Centre of Excellence, has now positioned itself as a major Centre for Development Banking and Finance. The short and medium term strategy of the College remains focused on imparting skills and knowledge and help capacity building of the ever growing national and international clientele from the banking and financial sector.

In this issue, we present an array of articles on various subjects. H.R. Khan and R.N. Dash, in their article "Financial Inclusion : A study of Business Correspondents in Orissa" bring out the methods of operations of the business correspondents and identify the operational issues affecting the model. S.V. Hanumantha Rao presents a case study of his bank in implementation of "Total Financial Inclusion" in its area of operation. E.V. Murray, in his article "Thailand The Kitchen of the World" enumerates the origin and growth of Thai food industry and draws lesson for India based on the Thai experience. J.K. Pandey and Naveen Sharma in their article "Investment Avenues for the UCBs" detail the various options available to UCBs in making investment portfolios sound and profitable. Vidyadhar Anaskar, citing a Supreme Court ruling advises the UCBs to go for writing off of bad debts and take advantage of the tax provisions in a prudent manner. A summary of the Conference on SME Financing (in Hindi) organized by the College at New Delhi during May 2007 also figure in this issue.

D. Ramdayal's review of the book "लघु और मध्यम उद्यम : समस्याएँ व समाधान" (SME Financing), in Hindi, highlights the various aspects of SME financing. Ramakant, while reviewing the book "समय प्र ंधन और संगठनात्मक विकास" (Time Management) brings out the finer points in time management as enumerated by the author. S. Chinngathlian in her review of the book "The World Economy: A Millennial Perspective" brings out as to how the author's quantitative analysis of history of the millennium hold great relevance for contemporary policy makers.

I would be glad to receive your valuable suggestions and opinions in making this magazine more contemporary and reader friendly and hope to bring out more focused issues in future.

August, 2007

S C Ghose

Sandip Ghose

सम्पादक की कलम से

संपादकीय दल अपने सम्मानननीय संपादक श्री ए ा आर खान को सस्नेह विदा करता है ि न्होंने कृषि, ग्रामीण ऋण, एसएमई, माइक्रोफाइनांस, सू ाना और संप्रेषण टेक्नॉलॉ ाी, मानव संसाधन प्रबंधन ैसे क्षेत्रों के बारे में ाानकारी और ज्ञान प्रदान करने के प्रभावी और असरदार माध्यम के रूप में इस पत्रिका को विकसित करने में अहम भूमिका अदा की। पिछले कुछ समय के दौरान इस पत्रिका के सहकारी बैंकिंग, ग्रामीण वित्तीय सेवाओं में आइसीटी की भूमिका, ैविक कृषि, एसएमई वित्तपोषण आदि पर प्रकाशित विशेषांकों को सभी हिताधिकारियों एवं विद्वत पाठकों की भरपूर सराहना प्राप्त हुई। मैंने 7 मई 2007 से महाविद्यालय के प्रधाना ार्य का पदभार ग्रहण किया और सीएबी कॉलिंग के संपादक का दायित्व ग्रहण करना मेरे लिए अत्यंत गौरव की बात है। उत्कृष्ट क्षमता निर्माण का केंद्र रहा कृषि बैंकिंग महाविद्यालय अब विकासात्मक बैंकिंग और वित्त के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित हो ुका है। महाविद्यालय की अल्प और मध्यकालीन रणनीति बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के सतत ब ़ते राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के कौशल और ज्ञान को विकसित करने तथा उनके क्षमता निर्माण पर केंद्रित है।

इस अंक में हम आपके लिए विविध विषयों पर लेखों का गुलदस्ता ले आए हैं। श्री ए ा आर खान और श्री आर एन दाश ने अपने लेख "वित्तीय समावेशन-उड़ीसा में बि ानेस करेसपोंडेंट का एक अध्ययन" में बि ानेस करेसपोंडेंट के कार्य करने के तरीकों पर प्रकाश डालने के साथ ही इस मॉडल को प्रभावित करनेवाले परि ाालनगत मुद्दों पर भी ा र्ा की है। श्री एस वी हनुमंतराव ने अपने बैंक के परि ाालन क्षेत्र में "समग्र वित्तीय समावेशन" को लागू करने से संबंधित केस स्टडी प्रस्तुत की है। श्री ई वी मुर्रे ने अपने लेख "थाईलैंड-विश्व की रसोई" में थाई खाद्य उद्योग के उद्गम और विकास की गाथा द ि करते हुए थाई अनुभवों से भारत के लिए सीख ग्रहण करने की बात कही है। श्री ो के पांडेय और श्री नवीन शर्मा ने अपने लेख "शहरी सहकारी बैंकों के लिए निवेश के अवसर" में शहरी सहकारी बैंकों के लिए अपने निवेश संविभाग को म ाबूत और लाभप्रद बनाने के लिए उपलब्ध विविध अवसरों की ा र्ा की है। श्री विद्याधर अनासकर ने उ ातम न्यायालय के निर्णय का हवाला देते हुए शहरी सहकारी बैंकों को अपने अशोध्य ऋणों को बट्टे खाते डालने की हिदायत दी है और उन्हें विवेकपूर्ण ंग से कर प्रावधानों का लाभ उठाने के लिए कहा है। महाविद्यालय द्वारा मई 2007 में नई दिल्ली में लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण पर हिंदी में आयोि ात सेमिनार का सारांश भी इस अंक में शामिल किया गया है।

"लघु और मध्यम उद्यम:समस्याएं और समाधान" पर लिखी गई हिंदी पुस्तक की समीक्षा करते हुए श्री डी रामदयाल ने लघु और मध्यम उद्यमों के वित्तपोषण से ाुड़े विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है ाबकि एक अन्य हिंदी पुस्तक ठसमय प्रबंधन और संगठनात्मक विकासड की समीक्षा करते हुए श्री रमाकांत ने लेखिका द्वारा बताए गए समय प्रबंधन के बारीक मुद्दों पर ा र्ा की है। श्री एस ि ांगथलियन ने "दि वर्ल्ड इकॉनॉमी:ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव" पुस्तक की समीक्षा करते हुए बताया है कि लेखक द्वारा किया गया मिलेनियम के इतिहास का मात्रात्मक विश्लेषण समकालीन नीति निर्माताओं के लिए किस तरह से सहायक हो सकता है।

इस पत्रिका को अधिक समी ाीन और पाठकों के लिए उपयोगी बनाने के संबंध में मु ो आपके बहुमूल्य सु ाावों का इंत ाार रहेगा और मैं आशा करता हूं कि भविष्य में हम ायादा से ायादा विषय केंद्रित अंक प्रकाशित कर सकेंगे।

अगस्त, 2007

संदीप घोष